eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

21वीं सदी में भारतीय विदेश नीति पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता

दीपाली सिंह[1]
[1]शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या), विश्वविद्यालय प्रयागराज उ0प्र0

Received: 20 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय (1916-1968) का दर्शन 'एकात्म मानववाद' और 'अंत्योदय' 21वीं सदी के वैश्वीकृत, पूंजीवादी और तकनीकी–संचालित समाज में नीतिगत और वैचारिक विकल्पों के रूप में अत्यंत प्रासंगिक हैं। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में जब विश्व पूंजीवाद और समाजवाद/साम्यवाद के वैचारिक द्वंद्व में फंसा हुआ था, तब दीनदयाल जी ने एक ऐसे मार्ग का प्रतिपादन किया जो मानव को केवल एक आर्थिक इकाई न मानकर उसे शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का एकीकृत योग मानता है। प्रस्तुत शोध पत्र 21वीं सदी की समकालीन चुनौतियों जैसे– आर्थिक असमानता, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, मानसिक अवसाद, उपभोक्तावाद और लोक–कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के आलोक में उनके विचारों का पुनर्मूल्यांकन करता है। यह शोध पत्र स्पष्ट करता है कि कैसे 'अंत्योदय' (समाज के अंतिम व्यक्ति का उदय) की अवधारणा संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के मूल मंत्र "किसी को पीछे न छोड़े" के साथ पूरी तरह संरेखित है। अंततः,यह शोध प्रदर्शित करता है कि वर्तमान युग के बहुआयामी संकटों का समाधान पश्चिमी भौतिकवादी दृष्टिकोण के बजाय भारतीय एकात्मवादी चिंतन में समाहित है।

मुख्य शब्दः एकात्म मानववाद, अंत्योदय, चिति, विराट, 21वीं सदी, सतत विकास, आर्थिक असमानता।

Introduction

21वीं सदी तकनीकी प्रगति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), अभूतपूर्व वैश्विक कनेक्टिविटी और तीव्र आर्थिक संवृद्धि की सदी है। परंतु, इस चमक–दमक के पीछे समकालीन विश्व कई गंभीर संकटों से जूझ रहा है। धनी और निर्धन के बीच की खाई लगातार चौड़ी हो रही है, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन पर्यावरण संकट को जन्म दे रहा है और अत्यधिक उपभोक्तावाद ने मनुष्यों को भीतर से अकेला और मानसिक रूप से अशांत कर दिया है। पश्चिमी जगत से उपजी दो मुख्य विचारधाराओं– पूंजीवाद और साम्यवाद, ने मानव जीवन के केवल एक पक्ष (मुख्यतः आर्थिक) को ही सर्वोपरि माना। पूंजीवाद ने व्यक्ति को बेलगाम स्वतंत्रता देकर समाज को प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में झोंक दिया, वहीं साम्यवाद ने राज्य के नियंत्रण को इतना बढ़ा दिया कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसकी मौलिक पहचान ही समाप्त हो गई। ऐसी वैचारिक शून्यता के दौर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' एक मध्यमार्गी और समग्र विकल्प प्रस्तुत करता है। 1965 में प्रतिपादित यह दर्शन पश्चिमी 'व्यक्तिवाद' और 'समष्टिवाद' के बीच एक अनूठा संतुलन स्थापित करता है। दीनदयाल जी का मानना था कि कोई भी व्यवस्था तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक वह मानव की संपूर्णता को स्वीकार न करे। 21वीं सदी में जब दुनिया एक स्थायी, शांतिपूर्ण और न्यायसंगत मॉडल की तलाश कर रही है, तब दीनदयाल जी के विचार नीति–निर्माताओं और समाजशास्त्रियों के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ की तरह कार्य करते हैं।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

वर्तमान समय की भारत की विदेश नीति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार व दर्शन की गहरी छाप है। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध, शीत युद्ध और तिब्बत तथा भारत पर चीनी आक्रमण को देखा। इन घटनाओं के बाद, उन्होंने भारत की विदेश नीति में भावुकता की बजाय यथार्थवादी, व्यावहारिक एवं राष्ट्रवादी नीति अपनाने की सलाह दी थी। दीनदयाल जी ने नेहरू सरकार की आदर्शवादी विदेश नीति की भी आलोचना की थी। दुर्भाग्यवश लंबे समय तक केंद्रों में विभिन्न सरकारों ने जानबूझकर उनकी नीतिगत सिफारिशों को नजरअंदाज किया, जिसके परिणामस्वरूप प्रमुख अंतरराष्ट्रीय नेताओं द्वारा भारत को दरकिनार कर दिया गया। हालांकि मोदी सरकार के तहत वर्तमान व्यवस्था ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय को भारत की विदेश नीति के बौद्धिक आधार के रूप में उनके यथार्थवादी दर्शन को शामिल करके एक उचित और सम्मानजनक स्थान दिया है। अब समय आ गया है कि नीति निर्माताओं, विश्लेषकों, विद्वानों, छात्रों द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय का अध्ययन किया जाए और उन्हें समझा जाए।

➢ **एकात्म मानववाद : सैद्धांतिक ढांचा** (Theoretical framework of integral humanism)– दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन का मूल केंद्र 'मानव' है, परन्तु वह मानव पश्चिमी दर्शन की तरह एकाकी या समाज से कटा हुआ नही है। पश्चिमी दर्शन ने व्यक्ति और समाज को परस्पर विरोधी माना, जिसके कारण वहां व्यक्ति स्वतंत्रता एवं समष्टिवाद के बीच निरंतर संघर्ष चलते रहा। दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन को समझने के लिए उसके अंतर्निहित स्तंभों को समझना आवश्यक है। उनका दर्शन पश्चिमी यांत्रिक दृष्टिकोण के विपरीत एक जैविक दृष्टिकोण पर आधारित है। एकात्म मानववाद का आधार व्यक्ति से शुरू होकर राष्ट्र व राष्ट्रों से 'विश्व राज्य' तक जाता है।

❖ **मानव की चौमुखी अवधारणा :**

पश्चिमी दर्शन अक्सर मनुष्य को 'आर्थिक मानव' के रूप में देखता है, जिसकी मुख्य प्रेरणा लाभ कमाना और उपभोग करना है। इसके विपरीत, एकात्म मानववाद के अनुसार मनुष्य चार तत्वों से मिलकर बना है :

- शरीर : भौतिक और जैविक आवश्यकताएं।
- मन : भावनाएं, संवेदनाएं और आपसी संबंध।
- बुद्धि : विवेक, तर्क और निर्णय लेने की क्षमता।
- आत्मा : आध्यात्मिक चेतना, जो उसे ब्रह्मांड से जोड़ती है।

दीनदयाल जी के अनुसार, यदि किसी व्यवस्था में केवल शरीर की चिंता की जाए (जैसे पूंजीवाद में) या केवल राज्य के हितों की चिंता की जाए (जैसे साम्यवाद में), तो मानव का पूर्ण विकास असंभव है। इन चारों तत्वों की सामूहिक संतुष्टि ही वास्तविक सुख है।

❖ **समाज एक जैविक इकाई के रूप में –** पश्चिमी समाजशास्त्र 'सामाजिक अनुबंध' की बात करता है, जिसके तहत व्यक्तियों ने मिलकर समाज का निर्माण किया। दीनदयाल जी इस धारणा को खारिज करते हैं। उनके अनुसार, समाज कोई कृत्रिम अनुबंध नहीं है, बल्कि एक जीवित, जागृत और जैविक इकाई है। जैसे शरीर के विभिन्न अंग हाथ, पैर, आंख एक–दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं, वैसे ही व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और सृष्टि एक–दूसरे से जुड़े हुए संकेंद्री वृत्त हैं। इस श्रृंखला में कोई संघर्ष नहीं है,

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

बल्कि एकात्मता है। व्यक्ति का विकास समाज के बिना और समाज का विकास राष्ट्र के बिना संभव नहीं है।

❖ 'चिति' और 'विराट' की अवधारणा : राष्ट्र की आत्मा

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी ने राष्ट्र को केवल जमीन का टुकड़ा या लोगो का समूह नहीं माना। उन्होंने दो अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणाएं दीं : '***चिति' और 'विराट'***

- **चिति** : दीनदयाल जी के अनुसार, जैसे हर व्यक्ति की अपनी एक आत्मा होती है, वैसे ही हर राष्ट्र की भी एक अंतर्निहित आत्मा होती है, जिसे 'चिति' कहा जाता है। यह किसी राष्ट्र का वह संस्कृति–जनित आदर्श होता है जो सदियों के अनुभवों से छनकर बनता है। यदि कोई राष्ट्र अपनी 'चिति' के विरुद्ध जाकर बाहरी विचारों का अंधानुकरण करता है, तो उसका पतन निश्चित है। भारत की 'चिति' सहिष्णुता, सामंजस्य, अध्यात्म और वसुधैव कुटुंबकम् में बसती है।
- **विराट** : 'विराट' वह शक्ति है जो राष्ट्र के नागरिकों को एक सूत्र में बांधती है और राष्ट्र की 'चिति' को प्रगट करने का माध्यम बनती है। यह समाज की सामूहिक प्राण–शक्ति है। यदि किसी देश का 'विराट' जागृत हो जाए, तो वह बड़ी से बड़ी चुनौती को पार कर सकता है। 21वीं सदी में भारत अपनी सांस्कृतिक जड़ों को पहचानते हुए वैश्विक पटल पर 'विश्वबंधु' के रूप में उभरा है,जो चिति और विराट के पुनर्जागरण का ही प्रतीक है।

➢ अंत्योदय : 21वीं सदी का आर्थिक और सामाजिक न्याय (Antyodaya: Economic & social justice)

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का सबसे व्यावहारिक और लोक–कल्याणकारी विचार 'अंत्योदय' है। अंत्योदय का शाब्दिक अर्थ है – "समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का उदय।"

समाज का शीर्ष – विकास के संसाधन

मध्यम वर्ग – पूंजी का प्रवाह

अंतिम व्यक्ति – "अंत्योदय" (विकास की शुरुआत यहीं से हो)

- **'ट्रिकल–डाउन थ्योरी' की विफलता और अंत्योदय :–** 20वीं सदी के उत्तरार्ध में पश्चिमी अर्थशास्त्रियों का मानना था कि यदि शीर्ष पर आर्थिक विकास दर (GDP Growth) तेज होगी, तो उसका लाभ धीरे–धीरे छनकर नीचे के स्तर तक पहुंचेगा (Trickle & Down Effect)। लेकिन 21वीं सदी के आंकड़ों ने इस सिद्धांत को पूरी तरह विफल साबित कर दिया है। ऑक्सफैम की रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक धन का एक बहुत बड़ा हिस्सा केवल शीर्ष 1% लोगों के पास संकेंद्रित हो गया है। दीनदयाल जी ने दशकों पहले इस विफलता को भांप लिया था। उन्होंने कहा था कि आर्थिक प्रगति का पैमाना शीर्ष पर बैठे अमीर लोग नहीं, बल्कि समाज के सबसे नीचे, सबसे गरीब और सबसे उपेक्षित व्यक्ति की स्थिति होनी चाहिए। विकास की योजनाएं 'ऊपर से नीचे' (Top & Down) बनने के बजाय 'नीचे से ऊपर' (Bottom & Up) बननी चाहिए।

➢ समकालीन भारत में अंत्योदय का व्यावहारिक अनुप्रयोग

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

21वीं सदी के भारत की कई प्रमुख सरकारी नीतियां सीधे तौर पर अंत्योदय के दर्शन से प्रेरित दिखाई देती हैंः–

✓आयुष्मान भारत योजना : समाज के अंतिम व्यक्ति तक
✓स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित करना।
✓प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY): बुनियादी आवश्यकताओं के तहत सिर पर छत देना।
✓जन धन–आधार–मोबाइल (JAM Trinity): वित्तीय समावेशन के जरिए बिचौलियों को खत्म कर सीधे गरीब के खाते में लाभ पहुंचाना।
✓उज्ज्वला योजनाः गरीब महिलाओं को स्वच्छ ईंधन देकर उनके स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार करना।

ये सभी नीतियां दर्शाती हैं कि राज्य का प्राथमिक कर्तव्य समाज के सबसे कमजोर वर्ग को सशक्त बनाना है, जो कि दीनदयाल जी के अर्थशास्त्र का मूलमंत्र था।

21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों और उपाध्याय जी के विचारों की प्रासंगिकता– वर्तमान विश्व कई मोर्चों पर संकट का सामना कर रहा है। एकात्म मानववाद इन समकालीन संकटों का समाधान निम्नलिखित शीर्षकों में प्रस्तुत करता हैः

सतत विकास और पर्यावरण संकट (Sustainable Development & Climate Change)- पश्चिमी औद्योगिक मॉडल प्रकृति पर विजय (Conquest of Nature) के सिद्धांत पर आधारित रहा है। मनुष्य को प्रकृति का शोषक मान लिया गया, जिससे वैश्विक तापमान (Global Warming), वनों की कटाई और जैव विविधता का ह्रास हुआ। दीनदयाल जी ने 'प्रकृति का दोहन' और 'प्रकृति के शोषण' के बीच स्पष्ट अंतर रेखांकित किया था। उन्होंने कहा कि हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितना वह स्वतः पुनर्जीवित कर सके, ठीक वैसे ही जैसे गाय के थन से दूध निकाला जाता है, गाय का रक्त नहीं चूसा जाता।

''प्रकृति हमारी चेतना का विस्तार है। मानव और प्रकृति के बीच का संबंध उपभोक्ता और उपभोग्य का नहीं, बल्कि मां और पुत्र का है।''

– पंडित दीनदयाल उपाध्याय

उनका यह विचार संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (क्ळे) और पेरिस जलवायु समझौते के सिद्धांतों के साथ पूर्णतः मेल खाता है।

उपभोक्तावाद और मानसिक स्वास्थ्य का संकट – 21वीं सदी में अत्यधिक भौतिक सुख–सुविधाओं के बावजूद अवसाद, तनाव और आत्महत्या की दरें बढ़ी हैं। इसका कारण यह है कि आधुनिक समाज ने केवल 'शरीर' की जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान दिया, जबकि 'मन' और 'आत्मा' को भूखा छोड़ दिया। एकात्म मानववाद सिखाता है कि इच्छाओं की अंतहीन दौड़ मानव को कभी सुखी नहीं बना सकती। जब तक व्यक्ति अपनी आंतरिक चेतना और सामाजिक दायित्वों के बीच संतुलन नहीं बनाएगा, तब तक मानसिक शांति संभव नहीं है।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

5–3 वैश्वीकरण बनाम स्थानीयकरण– वैश्वीकरण (Globalization) ने संस्कृतियों का समरूपीकरण किया है, जिससे स्थानीय उद्योग और अनूठी सांस्कृतिक पहचानें खतरे में पड़ गई हैं। उपाध्याय जी 'स्वदेशी' और 'विकेंद्रीकरण' के समर्थक थे। उनके स्वदेशी का अर्थ यह नहीं था कि हम बाहरी दुनिया के लिए अपने दरवाजे बंद कर लें, बल्कि यह था कि हम अपनी स्थानीय क्षमताओं, संसाधनों और प्रतिभाओं पर भरोसा करें। आज का आत्मनिर्भर भारत अभियान और वोकल फॉर लोकल का नारा दीनदयाल जी के इसी स्वदेशी और विकेंद्रीकृत आर्थिक मॉडल का आधुनिक रूपांतरण है।

एकात्म अर्थशास्त्रः रोजगार–उन्मुख और मानवीय पूंजीवाद– दीनदयाल जी का अर्थशास्त्र मशीनों के खिलाफ नहीं था, बल्कि वह मशीनों के अमानवीयकरण के खिलाफ थे। वे एक ऐसे तकनीकी मॉडल के पक्षधर थे जो मानव श्रम का स्थान न ले, बल्कि मानव श्रम की उत्पादकता को बढ़ाए।

''हर हाथ को काम, हर खेत को पानी"

दीनदयाल जी का कहना था कि 'प्रत्येक को वोट' जहाँ राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना करता है वहीं 'प्रत्येक हाथ को काम व रोजगार' आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना करता है। दीनदयाल जी का मानना था कि एक सबल राष्ट्र ही विश्व को सही दिशा दिखा सकता है एवं विश्व गुरु की भूमिका में प्रतिष्ठित हो सकता है। आज जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ऑटोमेशन के कारण बड़े पैमाने पर नौकरियों के जाने का खतरा मंडरा रहा है, दीनदयाल जी का यह नारा अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। उन्होंने पूंजी–प्रधान उद्योगों के बजाय श्रम–प्रधान और लघु एवं कुटीर उद्योगों पर बल दिया।

21वीं सदी के भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में, जहां जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाना है, बड़े कॉर्पोरेट्स के साथ–साथ ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में छोटे उद्योगों का जाल बिछाना अनिवार्य है, ताकि प्रत्येक नागरिक को गरिमापूर्ण रोजगार मिल सके।

➢ **आलोचनात्मक मूल्यांकन –** यद्यपि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार अत्यंत उत्कृष्ट और आदर्शवादी हैं, परंतु 21वीं सदी की जटिल भू–राजनीतिक और आर्थिक वास्तविकताओं के संदर्भ में इनके क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियां भी हैंः

- आदर्शवाद बनाम व्यावहारिकता : चिति और विराट जैसी अवधारणाएं दार्शनिक रूप से अत्यंत समृद्ध हैं, लेकिन इन्हें आधुनिक धर्मनिरपेक्ष और बहुसांस्कृतिक लोकतांत्रिक कानूनी ढांचे में नीतिगत रूप से परिभाषित करना और मापना कठिन होता है।
- वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ाव : आज के दौर में कोई भी राष्ट्र पूरी तरह आत्मनिर्भर या अलग–थलग रहकर जीवित नहीं रह सकता। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के युग में, स्वदेशी की अतिवादी व्याख्या आर्थिक संवृद्धि की गति को धीमा कर सकती है। इसलिए, स्वदेशी को आधुनिक संदर्भ में नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है, जैसा कि भारत अपनी वर्तमान विदेश व्यापार नीति में कर भी रहा है।

निष्कर्ष– पंडित दीनदयाल उपाध्याय केवल एक राजनीतिक संगठनकर्ता नहीं थे, बल्कि वे एक दूरद्रष्टा विचारक थे, जिन्होंने भारत की सनातन विचार–परंपरा को आधुनिक राजनीतिक–आर्थिक संदर्भ में ढालकर प्रस्तुत किया। 21वीं सदी के वैश्विक संकट इस बात का प्रमाण हैं कि केवल भौतिक समृद्धि या राज्य का

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

अत्यधिक नियंत्रण मानव कल्याण की गारंटी नहीं दे सकते। उनका 'एकात्म मानववाद' व्यक्ति और समाज, मानव और प्रकृति, तथा भौतिकता और आध्यात्मिकता के बीच एक सेतु का निर्माण करता है। वहीं, 'अंत्योदय' का सिद्धांत नीति–निर्माण के लिए एक अचूक नैतिक दिशा–निर्देश प्रदान करता है। यदि विश्व को एक न्यायपूर्ण, पर्यावरण–अनुकूल और शांतिपूर्ण भविष्य की ओर बढ़ना है, तो उसे दीनदयाल उपाध्याय के इस एकीकृत और मानवीय दृष्टिकोण को अंगीकार करना ही होगा। उनका दर्शन कल भी प्रासंगिक था, आज भी है, और आने वाली सदियों में भी मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था– "यदि मेरे पास दो दीनदयाल हों, तो मैं भारत का राजनीतिक चेहरा बदल सकता हूँ।"

संदर्भ–

- उपाध्याय, दीनदयाल. (1965). एकात्म मानववाद (Integral Humanism). नई दिल्ली, सुरुचि प्रकाशन।
- उपाध्याय, दीनदयाल. (1968). राष्ट्रजीवन की दिशा. नई दिल्लीरू भारतीय विचार साधना।
- उपाध्याय, दीनदयाल. (2016). दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाइय (खंड 1–15). (संपादकः डॉ. महेश चंद्र शर्मा). नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
- शर्मा, महेश चंद्र. (2005). पंडित दीनदयाल उपाध्याय : विचार और दर्शन. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- केलकर, संजीत. (2018). पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारधारा और नीतिगत प्रासंगिकता. मुंबई लोकवाद्भ्य गृह, सिन्हा, वी. एन. (2014). समकालीन भारतीय राजनीतिक चिंतन. जयपुर, रावत पब्लिकेशंस।
- गोधरा, आर. के. (2019). 21वीं सदी में अंत्योदय की अवधारणा और सामाजिक समावेशन, भारतीय समाजशास्त्रीय समीक्षा, 12(3), 45–56
- कुमार, सतीश. (2021). 'एकात्म मानववाद और सतत विकास लक्ष्य एक तुलनात्मक अध्ययन', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 28(2), 112–125
- Oxfam International. (2024). Survival of the Richest: How billionaires are driving economic inequality. Oxfam Briefing Paper.
- United Nations. (2015). Transforming our world: the 2030 Agenda for Sustainable Development. New York: UN Publishing
- मिश्रा, अनिरुद्ध. (2020). स्वदेशी अर्थशास्त्र और आधुनिक भारत. नई दिल्ली, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
- जोशी, मुरली मनोहर. (2017). दीनदयाल उपाध्याय और विज्ञान–तकनीकी का मानवीय चेहरा, प्रज्ञा जर्नल, 44(1), 15–22
- Paranjape, Makarand. (2016). The Many Spaces of Indian Humanism. London: Routledge.
- Ram, Jagjivan. (1974). Antyodaya and the Dalits of India. New Delhi: S. Chand & Co.
- भारत सरकार. (2023) नीति आयोग रिपोर्ट राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (National Multidimensional Poverty IndeÛ). नई दिल्ली, नीति आयोग।